International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
April- 2020, Volume-7, Issue-2
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

जनपद मेरठ के महाविद्यालयों में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

Mr. Arun Kumar
Scholar
Department of Education
Malwancha University, Indore(M.P.).

Dr. Ritu Bhardwaj
Supervisor
Department of Education
Malwancha University, Indore(M.P.).

सार–

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के अनेक अनुसन्धानों और आविष्कारों के फलस्वरूप ज्ञान के क्षेत्र में आश्चर्यजनक परिवर्तन व विकास हुआ है। ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में, ज्ञान की महत्वपूर्ण देन–''ज्ञान का वैज्ञानिक विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं विवेचन है।'' शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक रीति के प्रयोग से जो विशेष लाभ हुआ है, उसका प्रतिफल विषय का वस्तुनिष्ठ अध्ययन और बाल आन्दोलन के रूप में वह हमारे समक्ष आया है। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य बालक–बालिका को दवा की तरह ज्ञान पिलाना नहीं रहा है वरन् उसे शिक्षा ग्रहण करते समय सक्रिय रखना तथा क्रिया के द्वारा सीखाना शैक्षिक कार्यक्रम का एक विशिष्ट अंग बन गया है। बालक–बालिकाएं अब एक निष्क्रिय श्रोता नहीं रहे और न ही शिक्षा अब निष्क्रिय अरूचिपूर्ण प्रक्रिया रह गयी है। अब शिक्षा प्रदान करते समय शिक्षक का यह पवित्र कर्तव्य माना जाता है कि वह बालक–बालिका की शारीरिक, मानसिक शक्तियों व योग्यताओं तथा रूचि–रूझानों का सम्यक् अध्ययन कर तद्नुरूप बुद्धिलब्धि एवं क्षमता के अनुकूल ही उसे शिक्षा प्रदान करे। इस प्रकार 'शिक्षा' एक सोद्देश्य प्रक्रिया है।

प्रस्तावना–

आधुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेरबदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनो–सामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षक, शिक्षा और प्रशिक्षु जगत भी अछूता नहीं है, परन्तु प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएं धार्मिक प्रवृत्ति से समृद्ध थी जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य मात्र का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। इसके साथ–साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक में आ जाता है कि आज शैक्षिक जगत व शिक्षकों के व्यवहार में अनेक विसंगतियां हैं। इन विसंगतियों को तो दूर करने की माँग उनके प्रशिक्षणकार्य यानी शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रशिक्षण के दौरान ही किया जा सकता है। शिक्षकों के भावी जीवन का सम्पूर्ण प्रशिक्षण शिक्षक प्रशिक्षण ही होता है। आदिकाल से लेकर आज तक शिक्षक की भूमिका, उसके कार्य, उसकी जवाबदेही एवं समाज की उसके प्रति अपेक्षा आदि तथ्यों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी शिक्षक को उसकी मुख्य भूमिका के रूप में जाना ता जाता है, लेकिन आज का शिक्षक प्राचीन शिक्षक की भांति गुरूत्व नहीं रखता, हाँ वह एक

वेतनभोगी इकाई अवश्य बन गया है। समाज के बदलते नजरिये, बदलते जीवन मूल्यों का प्रभाव शिक्षा जगत पर पड़ा है। आज का शिक्षा जगत एक व्यवसायिक तन्त्रका रूप लेता जा रहा है। साथ ही शिक्षा के बाजारीकरण ने शिक्षक को एक व्यवसायिक तथा बिकाऊ वस्तु बना दिया है, जिसके चलते विद्यालयों की स्थापना, विश्वविद्यालयों की स्थापना, गुरू–शिष्यों के सम्बन्धों में भी अर्थ ने अपनी अलख जगा दी तथा नाना प्रकार के अन्य प्रभाव यथा आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण, तकनीकीकरण, वैष्वीकरण, निजीकरण एवं उदारीकरण आदि का भी शैक्षिक जगत एवं शिक्षक के स्वरूप तथा भूमिका पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। सरकारी स्कूलों के शिक्षक सरकारी नौकर बनने को विवष है और निजी क्षेत्र में वहां के प्रबंधन के वेतन भोगी सेवक, जहाँ उनसे पूर्ण वेतन पर हस्ताक्षर करा कर आधा अधूरा वेतन दिया जाता है। विद्यालयों में प्रवेश में मोटी धनराषि, परीक्षाओं में नकल कराया जाना आदि सामान्य सी प्रक्रिया है। व्यावसायीकरण के क्षेत्र में उचित कार्य की पहचान करना एक मुष्किल कार्य है। कार्य स्वयं एक अभिप्रेरणा के रूप में कैरियर विकास से जुड़े हुए स्वाभाविक एवं अस्वाभाविक कार्य के अन्तर्गत किया जाता है। स्वाभाविक कार्य अभिप्रेरणा के वास्तविक कार्य मूल्य जो कार्य अनुभव का आधार होता है। अस्वाभाविक कार्य में अधिक धन कमाना, नेतृत्व और पहचान आदि कार्य अभिप्रेरणा हैं। कार्य की मूल अभिप्रेरणाा में स्वायत्तता, अन्य की सहायता, स्वाभिमान, जोब सुरक्षा, सहयोग, समाज सेवा, पहचान, मुआवजा, उपलब्धि, कौशल प्रयोग, नेतृत्व, सृजनात्मकता, विविधता, चुनौतियाँ, खाली समय एवं कलात्मक अभिव्यक्ति आदि कार्य आन्तरिक अभिप्रेरणा के अन्तर्गत आते हैं। ग्रे, फिल्ड (**2003**) के अनुसार, 'कार्य में एक षानदार कार्य सभी के लिए हो, केन्द्र का वितरण समान रूप से हो, उपलब्धि और कार्य की षैली और कैसी वेतन तथा जोब सुरक्षा साथ ही कार्य स्थान पर कर्मचारियों का मनोरंजन कैसा हो आदि एक षानदार कार्य की पहचान हो, जो कार्य अभिप्रेरणा को आधार प्रदान करता है। हेन्स, सेली के अनुसार, 'दबाव–प्रबन्ध– यह दबाव हमें ही नहीं मारता है, बल्कि हमारी प्रतिक्रियाओं को भी मार देता है।' दबाव का संवेगात्मक एवं षारीरिक तनाव के कारणों द्वारा व्यक्ति की बाह्य जगत की प्रतिक्रियाओं पर दबाव पड़ता है। यह जब होता है जहाँ व्यक्ति की आकांक्षा और कार्य करने की क्षमता के बीच संगतता होती है। दूसरे शब्दों में दबाव का अर्थ कुछ कार्य प्रदर्शन पर दबाव ज्यादा हो, कार्य का प्रदर्शन उपलब्ध संसाधानों से है। दबाव = तनाव **झ** संसाधन दबाव का वर्चस्व आधुनिक काल का शब्द नहीं है। यह तो हिप्पोक्रेटस के काल से चिकित्सा विज्ञान से अवतरण किया हुआ है। वाल्ट केनन हावर्ड विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर ने आधुनिक दबाव के विचार को बीसवीं सदी के षुरूआत में औपचारिक रूप प्रदान किया है।

बेरान, बर्न तथा कैन्टोविज (1980) ने अभिप्रेरणा को बहुत ही सार्थक ढंग से परिभाषित किया है– 'अभिप्रेरण से तात्पर्य एक प्रेरक तथा कर्षण बल से होता है जो खास लक्ष्य की ओर व्यवहार को निरन्तर ले जाता है।' सिकारेल्ली तथा मेयर (2006) ने अभिप्रेरणा के बारे में बताया कि 'अभिप्रेरणा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा क्रियाएँ प्रारम्भ होती है, निर्देषित होती है तथा सतत् चलती रहती है ताकि दैहिक या मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं या इच्छाओं को पूरा किया जा सके।' अभिप्रेरणा व्यक्ति की एक ऐसी आन्तरिक अवस्था को कहा जाता है जो उसमें कुछ क्रियाएं उत्पन्न करके उसके व्यवहारों को एक खास दिषा में उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसित करता है। इन मनोवैज्ञानिक के विचारों का विष्लेषण करने पर हमें अभिप्रेरणा के स्वरूप का पता चलाता है। मनुष्य के जीवन में अभिप्रेरणा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब यह अभिप्रेरणा विद्यार्थियों से सम्बन्धित हो तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में इसका महत्त्व बढ़ जाता है। अधिगम उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करना बहुत जरूरी होता है। विद्यार्थी किसी कार्य को तभी सीख सकते हैं जब उनमें उस कार्य के प्रति रूचि हो और यह रूचि प्रेरणा

से ही सम्भव है। थॉमसन महोदय ने कहा है कि, 'प्रेरणा छात्रों में रूचि उत्पन्न करने की कला है।' अभिप्रेरणा कक्षागत वातावरण का एक सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि यह विद्यार्थी में नए ज्ञान को पूर्व ज्ञान से जोड़ने के लिए प्रेरित करती है। अध्ययन के इस महत्त्व की सार्थकता को अन्य अध्यापकों द्वारा भी स्थापित किया जाना चाहिए, क्योंकि एक में विद्यार्थियों में मोटिवेसन शिक्षक ही स्थापित कर सकता है। वर्तमान में अध्यापकों के लिए अनेकों प्रकार की शैक्षिक तकनीकी भी शिक्षण में प्रभावषीलता हेतु सहायक सिद्ध हो रही है। जिससे वे अपने कार्य को प्रभावी एवं स्थायित्व प्रदान कर सकते है। 21वीं षताब्दी विज्ञान एवं तकनीकी कों समर्पित मानी जाती है। इसकार्य में शिक्षण तथा प्रशिक्षण कैसे पीछे छूट सकता है। इसलिए अध्यापकों के शिक्षण प्रशिक्षण में अनेकों तकनीकियों का प्रयोग किया जाता है जैसे व्यावहारिक तकनीकी, सूक्ष्म शिक्षण और शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग में कुशलता आदि। वर्तमान में साईबर अर्थात् इण्टरनेट ने अपने क्षेत्र में बहुत अधिक प्रभाव छोड़ा है। शिक्षा के हर क्षेत्र में आज साईबर सामग्री अपने पांव पसार चुका है। इसलिए अध्यापकों के अनुदेशन में साईबर संसाधानों के प्रयोग का भी अभिप्रेरित किया जा रहा है और कई विश्वविद्यालयों में इसे पाठ्यक्रम का हिस्सा भी बनाया जा रहा है। वर्तमान में अध्यापक केवल परम्परागत विधियों से पढ़ाकर अपने कार्य को प्रभावी बनाना उसके लिए एक प्रष्नचिह्न है। इस हेतु भावी अध्यापकों को ऑनलाइन अधिगम संसाधानों के प्रयोग का प्रशिक्षण करवाना अनिवार्य सा हो जाता है। इसलिए शिक्षा क्षेत्र में प्रशिक्षणार्थियों की प्रवत्ति एवं कार्य अभिप्रेरणा एक महत्वपूर्ण कारक हो जाते हैं। जिनका अध्ययन करना और सही दिषा का पता करना शोधकर्त्ताओं के लिए एक अहम् प्रष्न है। इनके शिक्षण व्यवहार व कार्यात्मक अभिप्रेरणा में भी कमी दिखाई देती है। इसलिए शिक्षक समुह के प्रशिक्षणार्थियों के कार्य अभिप्रेरणा को समझना बहुत आवश्यक है।

- इस अध्ययन से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के ऑनलाइन अधिगम संसाधानों के प्रयोग एवं प्रशिक्षण से उनकी कक्षागत प्रभावशीलता का वास्तविक ज्ञान हो सकेगा।
- इस अध्ययन से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के काम में आने से उनके शिक्षण व्यवहार में विकास हो सकेगा।
- इस अध्ययन से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा का पता चलेगा।
- इस अध्ययन से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा का और ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का पता किया जायेगा तथा उनमें कैसे सुधार किया जाये यह भी बताया जायेगा।
- इस अध्ययन से शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के ऑनलाइन अधिगम संसाधानों के प्रयोग में आने वाले कठिनाईयों को ध्यान में रखकर आगे की योजनाओं को इस प्रकार से बनाने के सुझाव दिये जायेंगे जिनसे उनके शिक्षण को और अधिक कारगर बनाया जा सके।
- इस अध्ययन से शिक्षक समुदाय के प्रशिक्षणार्थियों के अत्याधुनिक संसाधानों के सफलता पूर्वक अनुप्रयोग से शिक्षण–व्यवहार को सकारात्मक एवं कार्य अभिप्रेरणा को बढ़ाने वाले बिन्दुओं को ध्यान में रखकर योजनाएं बनाई जायेगी।

निष्कर्षतः इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाना है कि शिक्षण एक भरण पोषण आजीविका नहीं है, बल्कि समाज के प्रति दायित्वों से भरी वृत्ति है। समाज के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी शिक्षकों की है, अतः उनके सन्दर्भ में कोई भी घोषणा महत्त्वहीन हो ही नहीं सकती क्योंकि इसका सम्बन्ध शिक्षा एवं

शिक्षकों से है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

शोधकार्य को करने से पहले उसका औचित्य का ध्यान रखना आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में किसी शोध अध्ययन की प्रारम्भिक तैयारी की जाती है तो उस अध्ययन के भविष्य में शैक्षिक जगत के लिए क्या परिणाम होंगे? इस तथ्य के औचित्य को स्पष्ट करना आवश्यक है। शिक्षा जगत को प्रभावित करने वाले परिणामों को प्रस्तुत करना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

शिक्षकों को अपने शिक्षण दायित्वों को निभाने हेतु विभिन्न प्रकार से सहायता कर सकती है। उपयुक्त शिक्षण हेतु उन्हें विभिन्न प्रकार की सूचनाएं, ज्ञान तथा आँकड़े चाहिए। इन सबको ठीक प्रकार से प्राप्त करवाने में सूचना एवं ई–सम्प्रेषण तकनकी बहुमूल्य सहयोग दे सकती है। इस तकनीकी के उपयोग ने आज यह संभव कर दिया है कि विद्यार्थी अपनी इच्छित सूचनाएं, तथा ज्ञान को स्वतः ही अपने ढंग से प्राप्त कर सकें। अतः उनके सामने अब ज्ञान के भण्डार के नए स्रोत खुल गए हैं और उसका स्वरूप विद्यार्थी–केन्द्रित होता जा रहा है। वर्तमान समाज के लिए सूचना प्रौद्योगिकी व ई–सम्प्रेषण तकनीकी की महत्व सम्पूर्ण शिक्षा तंत्र पर सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। आधुनिक शिक्षा जगत में सूचना एवं ई–सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी की अभिव्यक्ति का सषक्त साधन मल्टीमीडिया व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया है। लेकिन देखने में यह आता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थी जिनको विद्यालयों में पढ़ाई करने के कार्य के अभ्यास के लिए भेजा जाता है कि वे अपने ऊपर कक्षा में जाने पर पड़ने वाले मानसिक दवाब को हटा सके, और कक्षा कक्ष वातावरण में आधुनिक तकनीकियों का प्रयोग करना सीख लें, लेकिन तकनीकी की आवश्यकता को नजर अंदाज करते आते हैं। वे इस प्रकार के प्रशिक्षण को गम्भीरता से नहीं लेते हैं, जिसके चलते उनका अभ्यास एक औपचारिकता मात्र बनकर रह जाता है ये ही प्रशिक्षणार्थी जब आगे चलकर शिक्षक बनकर शिक्षण का कार्य करने लगते है तो उनके सामने अनेक कठिनाइयां आने लगती हैं। जिनका वे कोई समाधान नहीं कर पाते हैं। इसी प्रकार से न तो वे छात्रों की परेशानियों, सन्देहास्पद तथा जिज्ञासाओं का कोई समाधान कर पाते हैं और न ही उनका कोई प्रभाव रहता है। शोध प्रष्न शोधार्थी के मन–मस्तिष्क में कई प्रकार के प्रष्न घूम रहे हैं। जिनके उत्तर प्राप्त करना इस शोध का प्रमुख उद्देश्य हैं।
जो इस प्रकार से हैं–

- शिक्षक के छात्रों की कार्य अभिप्रेरणा को क्या उनके अध्ययन संकाय प्रभावित करता है अथवा नहीं?
- शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग की अभिवृत्ति को क्या उनके अध्ययन संकाय प्रभावित करता है अथवा नहीं?
- शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा किस संकाय के विद्यार्थियों की सबसे ज्यादा है?
- शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग की अभिवृत्ति किस संकाय के विद्यार्थियों की सबसे ज्यादा सकारात्मक है, किसकी विपरित है?
- शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा एवं साईबर संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में किसी प्रकार का कोई सहसम्बन्ध है अथवा नहीं?

आधुनिक युग में शिक्षा के प्रति छात्रों में बढ़ते हुए अलगाव को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने शिक्षण विधियों में नवाचार लाये। नवाचार एक ऐसा विचार है जिसमें व्यक्ति नवीनता का अनुभव करता है। यह पूर्ण नियोजित नवीन एवं विशिष्ट परिवर्तन है, जिसमें विशिष्टता के गुण निहित रहते हैं और इसका उद्देश्य वर्तमान परिस्थितियों में सुधार करना होता है।

चुनौतियों एवं तकनीकी आविष्कारों का प्रयोग करने में अनेकों चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक शिक्षा हेतु क्षेत्र में समावेशन के क्रियान्वन में हितार्थी संस्थाओं को आने वाली समस्यायें एवं चुनौतियों का अध्ययन करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया जाना है ताकि 'अध्यापक शिक्षा' के क्षेत्र में अधिक गुणवत्ता प्रदान करने में अपना आवश्यक योगदान प्रस्तुत कर सके। वर्तमान समय में हर वर्ष लगभग हजारों माध्यमिक प्रशिक्षणार्थी प्रषिक्षित होकर निकलते है। इन शिक्षण शिक्षा संस्थाओं से निकलने वाले अधिकतर शिक्षकों में दबाव प्रबन्ध एवं स्वस्थ कार्य मूल्यों का होना अतिआवश्यक है। इस हेतु शोधार्थी पूर्व में हुए अनेकों शोधों के आधार पर भी प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य स्थापना करेगी। वैष्वीकरण, सार्वजनीकरण एवं निजीकरण के इस युग में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा प्रायः जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। बालक की शिक्षा पारिवारिक वातावरण से प्रारम्भ हो जाती है परन्तु औपचारिक शिक्षा की प्रक्रिया विद्यालय में चलती है जिसके द्वारा हर बालक भावी जीवन के लिए तैयार होता है। जीवन निर्माण की इस प्रक्रिया में एक रचनाकार या निमार्णकर्त्ता के रूप में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। शिक्षा के क्षेत्र में आज नवीन चुनौतियाँ उभरकर सामने आ रही है। इन चुनौतियों का सामना करने की अभियोग्यता विकसित करने के लिए शिक्षकों की योजना में बदलाव लाने की जरूरत है। शिक्षा के बदलते स्वरूप के सन्दर्भ में एक भावी शिक्षक में मुख्य रूप से जो कौशल व योग्यताएं होनी चाहिए, उनके विकास हेतु अध्यापक शिक्षा लिए पृष्ठभूमि में अनेकों हितार्थी या कहे भागीदारी देने वाली संस्थायें निरन्तर प्रयासरत है, परन्तु फिर भी इन भागीदारी संस्थाओं पर अनेकों प्रष्न उठाये जाते हैं, कई बार तो ये संस्थायें खुद संदेह की घेरे में आ जाती है तो शोधार्थी के मन में प्रष्न उठता है कि अध्यापक की शिक्षा के क्षेत्र में भागीदार संस्थाओं के सम्मुख किस प्रकार की चुनौतियाँ है एवं उनके नियोजन हेतु वे क्या–क्या रणनीतियाँ बनाती एवं परिवर्तन कहाँ आवश्यक है। शोध अन्तराल शोधार्थी का यह दावा कतई नहीं है कि कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति से सम्बंधित अध्ययन नहीं किया गया है। इस सम्बंध में अनेकों शोध पूर्व में हो चुके जिनको शोधार्थी ने अपने शोध का आधार बनाया है। इन शोधों के पुनरावलोकन में पाया है कि कार्य अभिप्रेरणा अध्यापकों के कार्य जीवन का एक महत्वपूर्ण कारक है और बदलते परिवेश में ऑनलाइन अधिगम संसाधनों का प्रसार भी बढ़ता जा रहा है। इसलिए अध्यापकों को इसका अवबोध होना आवश्यक हो जाता है।

पूर्व शोधों एवं शोधार्थी के शोध में निम्नलिखित बिन्दुओं से अन्तराल निर्धारित करने का प्रयास किया गया है–

- मेरठ जिले के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन करने का निश्चय किया है।
- कार्य अभिप्रेरणा से सम्बंधित अध्ययन पर बहुत कम शोध हुए है और शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा जैसे चर पर कोई अध्ययन नहीं किया गया है। इसलिए इस क्षेत्र में अध्ययन करके भावी अध्यापकों की कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन करके इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा।

- प्रस्तुत शोध के माध्यम से मेरठ जिले के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने का एक सार्थक प्रयास है

शोध समस्या का क्षेत्र ऑनलाइन अधिगम संसाधनों ने आज विश्व में विशेष स्थान प्राप्त कर लिया है। शिक्षा एक सामाजिक, संगठित कार्य है। जिसमें परिवार, स्कूल सरकार, समाज सभी का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से सम्बंध होता है, उसी प्रकार शिक्षा–शिक्षण कार्य में ऑनलाइन अधिगम संसाधनों का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जो शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उसके संसाधनों का कुशलता एवं प्रभावी ढंग से उपयोग करता है।

ऑनलाइन अधिगम संसाधनों का अर्थ बहुआयामी रूप में होता है। यह कार्य के साथ उन व्यक्तियों का भी बोध कराते है, जो इसके द्वारा कार्यों को सम्पादित करते हैं। अभिवृति व्यक्ति की नियोजन, संगठन, अभिप्रेरणा एवं नियंत्रण की प्रवृत्ति है, आज बहु–संचार संसाधनों का उपयोग शिक्षण में होने लगा है, जिसमें चित्र, आवाज एवं विषयवस्तु एक साथ अधिगमकर्त्ता के समक्ष प्रस्तुत की जाती है, जिससे पाठ्यवस्तु का अधिगम लम्बे समय तक रहता है। टेलीमैटिक्स इसका एक जीवन्त उदाहरण है, जिसमें सूचना तकनीकी एवं टेली कम्युनिकेशन का शिक्षा में उपयोगी है। यह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक वातावरण का एकीकरण कम्प्यूटर नेटवर्क के माध्यम से करता है। इसमें लागत भी कम आती है। शिक्षण और प्रशिक्षण या किसी भी ट्रेनिंग संस्थान में यह एक उपयुक्त साधन है। ब्रिटेन जैसे विकसित देशों में तो यह दूरस्थ शिक्षा का सशक्त साधन है। यह एक इन्टरेक्टिव माध्यम है, जिसके द्वारा जीवनपर्यन्त शिक्षा का सपना पूरा किया जा रहा है। इसमें शिक्षक एक सहायक एवं मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है।

अभिवृत्ति का सम्बन्ध सामाजिक पारिस्थियों में व्यक्ति के मानसिक पहलु से होता है। इसी प्रकार समकालीन परिस्थितियों में ऑनलाइन अधिगम संसाधनों का न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि जीवन के सभी आयामों में अत्याधिक प्रयोग होता है और इसकी गति दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है जिससे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में भी प्रयोग होना आवश्यक है। यह शोध कार्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा इन ऑनलाइन अधिगम संसाधनों का अपने कक्षा–कक्ष एवं वास्तविक शिक्षण में प्रयोग करने के सम्बंध में उनकी अभिवृत्ति कैसी और किन कारकों से प्रभावित रहती है? का एक प्रयास है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

- कला व विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन।
- विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन।
- वाणिज्य एवं कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा का अध्ययन।
- कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
- विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

- वाणिज्य एवं कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
- कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन।
- विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन।
- वाणिज्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- वाणिज्य एवं कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक नहीं है।
- विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- वाणिज्य एवं कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है,।
- कला वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- विज्ञान वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- वाणिज्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की कार्य अभिप्रेरणा एवं ऑनलाइन अधिगम संसाधनों के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति के मध्य परस्पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले तक सीमित रखा गया है।
प्रस्तुत अध्ययन केवल शिक्षा महाविद्यालयों तक सीमित है।
प्रस्तुत शोध में कुल 300 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।
न्यादर्श में 100 कला वर्ग से, 100 विज्ञान वर्ग से, तथा 100 वाणिज्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थी अध्ययन में शमिल किये गये हैं।

निष्कर्ष–

वर्तमान सन्दर्भ में यह अनुसंधान कार्य अपना महत्वपूर्ण योगदान किसी न किसी रूप में प्रस्तुत कर सकता है। क्योंकि आज के वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में कोई भी देश या राष्ट्र अपनी सीमाओं तक ही सीमित नहीं है। वह सम्पूर्ण जगत से किसी न किसी रूप से जुड़ा हुआ है। ऐसे विस्तृत कलेवर में विश्व के किसी कौने में घटने वाली छोटी से घटना किसी न किसी रूप में सम्पूर्ण विश्व पर अपनी छाप छोड़ती है। इसके लिए राष्ट्रों ने मिलकर विश्व के सभी राष्ट्रों को एक सूत्र में बाँधने के लिए अनेक प्रकार के उपाय किये गये है। इनमें आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, सुरक्षा इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण पक्षों के लिए अनेक प्रकार की संस्थाएं निर्मित की गई है। किन्तु इन सबके बावजूद सबल राष्ट्र दुर्बल राष्ट्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण विश्व विकसित एवं विकासशाली एवं अविकसित श्रेणियों में विभक्त है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- अग्रवाल, एल.पी. (2005) माडर्न एजूकेशनल रिसर्च, डोमिनेन्ट पब्लि0 एण्ड डिस्ट्री0, दिल्ली, 2005
- अली महमूद (2001) सोसियो साइकोलाजिकल डिटनामिनेन्ट्स आफ एजूकेशनल च्वाइस, अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली।
- टूबेल, राबर्ट एल. (1969) इनसाइक्लोपीडिया आफ एजूकेशन रिसर्च, फोर्थ एडिसन, दि मैकमिलन कम्पनी, कोलियर मैकमिलाण्ट लि0, लन्दन।
- उदय वीर (2005) इंट्रोडक्सन टू स्कूल साइकोलॉजी, अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, डी.एन. (2003) मनोवैज्ञानिक निर्धारण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, हुसैन, टार्सटेन (1985) दि इन्टरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड स्टडीज, वाल्यूम–9, टी.जेड. परगामान प्रेस, न्यूयार्क।
- हाब्स एण्ड हाब्स (2019) दि कनसाइज डिक्सनरी आफ एजूकेशन, वी.एन.आर., न्यूयार्क।
- कौर, जसवीर, कौर जगवीर (2014) ओबिडियन्ट डिसओबिडियेन्ट टेन्डेन्सी आफ एडोलसेन्ट
- इन रिलेशनशिप टू दियर फैमिली इन्वायरनमेन्ट।
- चांगजू शी (2011) ए स्टडी आफ रिलेशनशिप बिटवीन काग्नेटिव स्टाइल एण्ड लर्निंग स्ट्रेटजी हाई एजूकेशन स्टडीज, वाल्यूम–4, नं0–(1), जून–2011
- आर्य, वेद प्रकाश (2014) 'माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक निष्पत्ति वाले छात्र–छात्राओं में आत्मविश्वास एवं आज्ञाकारी–अवज्ञाकारी प्रवृत्ति का समीक्षात्मक अध्ययन'' वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, सन् 2014, पृष्ठ संख्या–4, 218–219.
- वशिष्ट, एस.आर (2004) थ्योरी ऑफ एजूकेशनल इवैल्यूएशन, अनमोल पब्लिकेशन, दिल्ली।
- तनेजा, आर.पी. (2020) द अमेरिकन हेरिटेज, डिक्सनरी ऑफ दि इंग्लिश लैंग्वेज, फोर्थ एडिसन, हाटन मिकिन कम्पनी।